Kendriya Sanskrit Vidyapeeth has not been established in Himachal Pradesh so far due to financial constraints.

कृषि अनुसंधान कार्य

3226. **श्री चिमनभाई हरिभाई शुक्ल:** क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) प्रत्येक पंचवर्षीय योजना के दौरान कृषि अनुसंधान कार्य पर कुल परिव्यय और सकल घरेलू उत्पाद की अलग-अलग कितने प्रतिशत धनराशि व्यय की गई है;

(ख) सातवीं और आठवीं पंचवर्षीय योजनाओं के दौरान कृषि अनुसंधान के किन-किन क्षेत्रों पर विशेष बल दिया गया; और

(ग) सातवीं और आठवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान कृषि अनुसंधान के क्षेत्र में मुख्य-मुख्य उपलब्धियां क्या रहीं?

कृषि मंत्री (श्री चतुरानन मिश्र): (क) कुल योजना परिव्यय के प्रतिशत तथा सकल घरेलू उत्पाद के प्रतिशत के रूप में प्रत्येक योजना अवधि के लिए किया गया अनुसंधान व्यय विवरण-I में दिये गये हैं। **(नीचे देखिए)**

(ख) सातवीं और आठवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान जिन क्षेत्रों में कृषि अनुसंधान पर विशेष बल दिया गया है वे विवरण-II में दिया गया है। **(नीचे देखिए)**

(ग) सातवीं और आठवीं पंचवर्षीय योजनाओं के दौरान कृषि अनुसंधान की मुख्य उपलब्धियां विवरण-III में दी गई हैं।

विवरण-I

योजना अवधि, देश का योजना परिव्यय, समग्रत: सकल घरेलू उत्पाद, कृषि अनुसंधान पर योजना व्यय, कुल योजना व्यय के प्रतिशत एवं समग्रत: सकल घरेलू उत्पाद के प्रतिशत के रूप में किए गए व्यय

(रु० करोड़ में)

योजना अवधि	देश का योजना परिव्यय (सार्वजनिक क्षेत्र)	समग्रत: सकल घरेलू उत्पाद	कृषि अनुसंधान पर योजना व्यय	कुल योजना परिव्यय के प्रतिशत के रूप में किया गया व्यय	समग्रत: सकल घरेलू उत्पाद के प्रतिशत के रूप में किया गया व्यय
चौथी योजना	15902	454114	81.56	0.5129	0.0179
5वीं योजना	39322	421764	105.73	0.2689	0.0251
छठी योजना	97500	681529	290.29	0.2977	0.0426
7वीं योजना	180000	880073	438.15	0.2434	0.0498
8वीं योजना	260460**	711961*	685.32*	0.2631	0.0962

स्रोत: एग्रीकल्चरल स्टेटिस्टिक्स एट ए ग्लांस, अर्थ एवं सांख्यिकी निदेशालय, कृषि मंत्रालय, भारत सरकार और आर्थिक सर्वेक्षण, 1995-96 (सकल घरेलू उत्पाद 1980-81 के मूल्यों पर उपादान लागत हैं)

* सकल घरेलू उत्पाद एवं आठवीं योजना अवधि के लिए योजना व्यय केवल आठवीं योजना के पहले तीन वर्षों (1992—95) के लिए हैं।

** आठवीं योजना के पहले तीन वर्षों (1992—95) के लिए योजना परिव्यय की गणना आनुपातिक आधार पर की गई है।

टिप्पणी: भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद/कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग चौथी योजना से योजना की परिधि में आया है।

विवरण-II

सातवीं योजना के अंतर्गत लिए गए वे क्षेत्र जिन पर विशेष ध्यान दिया गया

* पौधों, पशुओं व मात्स्यिकी जननद्रव्य संसाधनों का संरक्षण व नियोजित उपयोग व सुधार के लिए आनुवंशिक आधार विस्तृत करना।
* फसलों व पशुओं की नई किस्मों/नस्लों के द्वारा तथा साथ ही पीड़कनाशियों व रोगों, लवणीय व क्षारीय मिट्टी, सूखा, बाढ़ आदि के प्रति बहुविध प्रतिरोधता के साथ उत्पादन में वृद्धि करना।
* जैविक नाइट्रोजन स्थिरीकरण, निवेश उपयोग दक्षता तथा खरपतवार नियंत्रण पर बल देते हुए पोषण प्रबंध प्रणाली में सुधार लाना।
* नियोजित प्रबंधन व उपयोग के लिए सुदूर संवेदन तथा अन्य आधुनिक तकनीकियों के इस्तेमालकरने वाले प्राकृतिक संसाधनों की सूची पूर्ण करना।
* विभिन्न कृषि-जलवायु स्थितियों के अन्तर्गत अनिवार्य घटक के रूप में पशु व वृक्षों के साथ फसल जल संबंध तथा फार्म जल संरक्षण व प्रबंध के विकास पर बल देते हुए शुष्क फार्मिंग प्रौद्योगिकियों में सुधार करना।
* पशु शक्ति व अन्य पुनर्नव्य संसाधनों की इस्तेमाल करने के विशेष संदर्भ के साथ कृषि में ऊर्जा प्रबन्धन।
* कृषि उत्पादों का विपणन व संसाधन व फार्म भंडारण पर बल देते हुए कटाई उपरांत प्रौद्योगिकी।
* समाज के कमजोर वर्गों तथा युवा वैज्ञानिकों के लिए नई व आधुनिक प्रौद्योगिकियों के लिए अग्रत प्रशिक्षण देने पर बल देते हुए मानव संसाधनों का विकास करना।

आठवीं योजना के अंतर्गत लिए गए वे क्षेत्र जिन पर विशेष ध्यान दिया गया

* जैव प्रौद्योगिकी व परंपरागत प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल स निम्न, मध्यम व उच्च निवेश अवस्थाओं के अन्तर्गत बहु-प्रतिरोधिता व उच्च उत्पादकता वाली किस्मों के विकास द्वारा फसल की उत्पादन क्षमता में सुधार करना।
* तिलहन उत्पादन में आत्म निर्भरता प्राप्त करना।
* बागानी फसलों की उत्पादकाता बढ़ाना तथा निर्यात संभावनाओं का पता लगाना।
* उन्नत चारा जीन प्रारूपों व कृषि वानिकी प्रणाली द्वारा ईधन, चारा छोटी काष्ठ के लिए बायो मास उत्पादन में बढ़ोतरी करना।
* कृषि में ऊर्जा प्रबंधन तथा गैर परम्परागत ऊर्जा स्रोतों का उपयोग करना।
* पशुओं में त्वरित आनुवांशिक सुधार के भ्रूण स्थानान्तरण प्रौद्योगिकी तथा पशु रोगों से लड़ने के लिए आनुवंशिक अभियांत्रिकी का इस्तेमाल करना।
* खारे पानी, ठंडे पानी व ताजे पानी की जल कृषि प्रणाली में मछली उत्पादन में सुधार करना।

विवरण-III

सातवीं तथा आठवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान कृषि अनुसंधान के क्षेत्र की प्रमुख उपलब्धियां

सातवीं और आठवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान विभिन्न क्षेत्रों में हुई प्रमुख उपलब्धियां निम्नलिखित हैं:—

फसल विज्ञान

केवल आठवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान विभिन्न क्षेत्र फसलों की कुल मिलाकर 452 उच्च उपजशील और संकर किस्में विकसित की गई। इनमें अनाज की 222 किस्में (चावल 101, गेहूं 32, मक्का 26, ज्वार 20, बाजरा 15, छोटे मोटे अनाज 21 जौ 7), दालों की 92 किस्में (अरहर 15, उड़द 16, मूंग 20, चना 15, अन्य 26), तिलहनों की 75 किस्में (मूंगफली 21, तोरिया सरसों 14, सोयाबीन 8, सूरजमुखी 10, तिल 11, अन्य 9), रेशे वाली फसलों की 41 किस्में (कपास 40, पटसन 1) और गन्ने की 12 तथा तम्बाकू की 10 किस्में शामिल हैं। चावल की 101 किस्मों में 4 संकर किस्मों के साथ 57 किस्में सिंचित पारिस्थितिक प्रणाली के लिए, 21 बारानी उच्चभूमि के लिए, 20 बारानी निचली भूमि के लिए तथा 3 लवणीय मिट्टी के लिए थीं। गेहूं में 21 किस्में सिंचित व समय पर बुआई के लिए 5 पछेती बुआई के लिए तथा 6 बारानी क्षेत्रों के लिए थीं।

कपास के क्षेत्र में जहां भारत को विश्व का प्रथम संकर कपास पैदा करने का गौरव प्राप्त है, देसी कपास का एक विशिष्ट संकर विकसित करने पर पुनः उल्लेखनीय उपलब्धि प्राप्त हुई।

बासमती चावल (पूसा बासमती।), गेहूं की ड्यूरम (पी०डी० डब्ल्यू 223, पी०डी० डब्ल्यू० 215) और डिकोकम (डी०डी० के० 1001), माल्ट जौ की (बी०सी०यू०-73) तथा मिष्ठान श्रेणी के मूंगफली की बी०ए०यू०-13, टी०के०जी० 19 किस्मों में निर्यात की मात्रा को टिकाऊ व मजबूत करने में सहायक सिद्ध हुई हैं। अब वर्ष 1995-96 के दौरान गेहूं और चावल का निर्यात 40,000 मिलियन रु० से अधिक हुआ।

आनुवंशिक संसाधनों में राष्ट्रीय जीन बैंक के मूल संग्रह में 31 जनवरी, 1996 तक कुल 157439 प्रविष्टियां थीं जिनमें अनाज, छद्म अनाज, तिलहन, दाल, रेशे वाली फसलें, सब्जियां, मसाले आदि शामिल हैं। शीतोष्ण खाद्य पदार्थ सेब, आड़ू आलू बुखारे, किवी फल, बादामों की किस्में किसानों के खेतों तक पहुंच चुकी हैं।

लगभग 20,000 क्विंटल वार्षिक प्रजनक बीज का उत्पादन मांग की तुलना में वास्तविक उत्पादन स्तर प्रतिवर्ष लगभग कुछ सौ क्विंटल बढ़ा है। इस प्रकार निर्धारित बीज उत्पादन लक्ष्य में बढ़ोतरी हुई।

बागवानी

फलों में आम के चार आशाजनक संकर, चीकू के दो संकर, लीची का एक चयन, खट्टे नीबू का एक उन्नत चयन तथा अनोना का एक अंतर्विशिष्ट संकर जारी किए गए।

सब्जियों में चार सब्जियों के 13 एफ०आई० संकर और चार सब्जियों की रोग-प्रतिरोधी पांच किस्में जारी करने के लिए विकसित व पहचानी गई। केन्द्रीय किस्म निमुक्ति समिति द्वारा आलू की तीन किस्में जारी की गई।

पुष्प-विज्ञान में आठ फसलों की 41 किस्में-गुलाब, ग्लैडियोलस, किगसन्थमम, कारनेशन, चाइन-एस्टर, ट्यूबरोज, एमरिलिस, गेंदा जारी करने के लिए पहचानी गई।

मसालों में जारी करने के लिए सिफारिश की गई उन्नत किस्में हैं:— काली मिर्च, पैनियर-5, इलायची आई०सी०आर०आई०-1

लीची, कटहल, चीकू सीताफल और आम के लिए द्रुत वानस्पतिक प्रवर्धन पद्धतियों का मानकीकरण किया गया है।

पहाड़ों में पछेती अंगमारी रोग के लिए भविष्यवाणी पद्धति का मानकीकरण किया गया है और इसको मैदानी क्षेत्रों के लिए भी तैयार किया जा रहा है।

असली आलू बीज (टी०पी०एस०) के माध्यम से आलू फसल लेने के लिए एक वैकल्पिक, प्रौद्योगिकी का मानकीकरण किया गया है और बिहार, गुजरात, त्रिपुरा, पश्चिमी बंगाल तथा उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के अन्य राज्यों के लिए सिफारिश की गई है।

भा०कृ०अ०सं०, नई दिल्ली द्वारा कार्बोनिटिक अमरूद पेय विकसित किए गए हैं।

प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन

संसाधन तालिका कार्यक्रम में देश के मृदा मानचित्र 1:1 मिलियन पैमाने में और कुछ राज्यों में 1:250 000 पैमाने तैयार किए गए है। 6 राज्यों की आदर्श भूमि संसाधन एटलस तैयार की गई है।

फसल पद्धति प्रबन्धन कार्यक्रम में विभिन्न कृषि जलवायु क्षेत्रों के लिए उदीयामान दुहरे और बहु फसल चक्र तैयार किए गए कृषि यंत्रों और शाकनाशी के प्रयोग से महत्वपूर्ण खरपतवारों का समन्वित प्रबंधन विकसित किया गया, विभिन्न क्षेत्रों के लिए विभिन्न और प्रख्यात वृक्षों प्रजातियों और कृषि वानिकी पद्धतियों के लिए अनुकूल किस्मों की पहचान की गई। चावल आधारित फसल पद्धतियों का विकास किया गया है।

समुचित भूमि प्रयोग पद्धतियों विकसित करने के लिए, जलसंभार को प्रचालन इकाई मानकर, प्रबन्धन संसाधन में एक समग्र दृष्टिकोण लाभकारी पाया गया है।

मृदा प्रबन्धन में, विभिन्न फसल पद्धतियों के अंतर्गत फसल उत्पादकता को प्रभावित करने वाले मृद्धा-भौतिक दबावों का मूल्यांकन किया गया है और सुधार हेतु प्रौद्योगिकी विकसित की गई है उदाहरनार्थ-अधिकतम पारगम्य मृदाओं हेतु कम्पैक्शन, संरचन रूपरेखा या कड़ी तह वाली मृदाओं के लिए गहरी जोताई, और संरचनात्मक असंतुलित मृदाओं में पपड़ी बनने से रोकने के लिए आर्गेनिक पलवार विकसित किए गए हैं।

जल प्रबंधन कार्यक्रम में, सिंचाई जल प्रयोग की बचत के लिए और सिंचाई जल प्रयोग दक्षता बढ़ाने हेतु प्रौद्योगिकियां विकसित की गई हैं।

पौष्टिक प्रबन्धन कार्यक्रम में, विशिष्ट सूक्ष्मपोषक और गोड़ पोषकों के संबंध में मृदा उर्वरता स्तर का मूल्यांकन किया गया है।

कृषि अभियांत्रिकी

अनेक लोकप्रिय उपस्करों को विकसित किया गया। उनकी व्यवहार्यता हेतु परीक्षण किया गया और आदि प्ररूप उत्पादन के लिए लिया गया। ये उपकरणों सहित बहुउद्देश्यीय औजार ढांचे हैं तिलहन फसलों हेतु प्लांटर, मानव चालित बीडर आदि। एक गन्ना सेट कटर-सट-प्लांटर, ज्योति प्लांटर, लम्बी फसलों हेतु स्वनोदक उच्च सफाई फुहारा और बहुफसलों थ्रैसर विकसित किए गए हैं और वाणिज्यिक उपयोग हेतु उपलब्ध है।

शुष्कभूमि के लिए उपस्कर, पशुचालित यंत्र वाहक, मूंगफली रोपक और कुसुम हेतु एक शक्ति फसलकट (रीपर) रोपक विकसित किए गए हैं और विस्तृत रूप से इनका मूल्यांकन किया जा रहा है और विकसित किया गया मूंगफली प्लांटर वाणिज्यिक उपयोग हेतु उपलब्ध है। पावर टिल्लर हेतु विभिन्न बराबरी वाले उपस्कर जैसे सीड-कम-फर्टी-ड्रिल्स/प्लांटर, टिल प्लांटिंग मशीन, पोस्ट होल डिगर, फलोधान फसलों के लिए स्प्रेयर और रोटरी ब्लेडे ग्रासकटर की आकृतियां तैयार की गई हैं, विकसित की गई है और मूल्यांकन किया गया है। ट्रैक्टर चालित फील्ड प्लाट विकसित ड्रिलों का कुछ संस्थानों और विश्वविद्यालयों के परीक्षण फार्मों पर परीक्षण किया जा रहा है और उनकी उपलब्धि संतोषजनक पाई गई है। आयातित स्वनोपक फील्ड प्लाट ड्रिलों की तुलना में ये विकसित फील्ड प्लाट ड्रिलों की कीमत काफी कम है।

सोयपननार और सोय पुष्ट बिस्कुटों के उत्पादन के लिए प्रौद्योगिकियों का वाणिज्यिकीकरण किया गया है और विभिन्न सस्योत्तर प्रचालनों के लिए अनेक उपस्कर विकसित किए गए हैं।

जूट और कपास पर आधारित बदले हुए उत्पाद—जैसे सजावट के लिए मिश्रित सूत वस्त्र, मिश्रित अग्निरोधक हेतु अनबुना सूत, जूट मिश्रण, सूत और रेमी से सफारी सूटिंग का विकास किया गया है। इसी प्रकार लाख आधारित प्रतिरोधी सामग्री, वार्निश, लेप संघटकों का विकास किया गया है।

'वेष्टन, ढकी हुई कृषि करने और जलजीव प्रचालनों जैसी गतिविधियों के लिए कृषि में प्लास्टिक के प्रयोग का प्रयास किए जा रहे हैं, लाख उत्पादन में विकास हेतु प्रौद्योगिकी विकसित की गई है।

सिंचाई और जलनिकास अभियांत्रिकी, भू उपभूतल, बहु कूप स्थल जल निकास कूप रीचार्ज और संयुक्त प्रयोग की पहचान की गई है और किसानों के खेतों पर काम लेने के लिए इन्हें अपनाया गया।

पशु विज्ञान

पशु पोषक एवं कार्विकी पर एक संस्थान, तीन नेटवर्क गतिविधियां जैसे-सूक्ष्मपोषक, भ्रूण हस्तान्तरण प्रौद्योगिकी और फसल आधारित पशु उत्पादन पद्धति शुरू की गई। पशुओं के अधिक उत्पादन दबाव, जैसे कर्ण स्विस और करण फ्राइज का विकास किया गया है।

रैक्सबोइलेट और मेरीनो के साथ देशी चोकला और नाली भेड़ के संकरण द्वारा भारत मेरीनो भेड़ का विकास किया गया। भेड़ की "केरी" नामक एक नयी जीनोटाइप की पहचान की गई। संकर पूर्णतः हृष्टपुष्ट है और 1.2 किलोग्राम कारपेट किस्म की ऊन प्रदान करती है।

व्यावसायिक उपयोग के लिए "बरी-गोल्ड" के व्यापारिक नाम से संकर नस्ल के "ब्राउन एगर" का विकास करके उसे जारी किया गया और मुर्गी की चार देशी नस्लों में नामतः कनाथ, ऐसिल, नेवेश-नेक, फ्रिजल का आनुवांशिक गुणीकरण करके नस्लों का विवरण तैयार किया गया।

एक बटर मैल्टर विकसित किया गया है।

आपातकालीन राशन हेतु स्पेंट-बक मीट के प्रयोग से बकरी के मांस का एक उत्पादन चेवोन (एक निर्जलित पोषक एक सघन कीमा मांस उत्पाद) और एक चेवोन अचार, स्वयं स्थायी उत्पाद विकसित किए गए हैं।

सीरम महामारी संबंधी अध्ययनों के लिए एक उच्च विशिष्ट और संवेदनशील नैदानिक परीक्षण डी०ओ०टी० एलिसा का विकास किया गया है। क्लीनिकल थिलिरियोसिस उपचार हेतु केसोथिरैपी की जांच की गई है। एफ० एम० डी० की एपिडेमियालाजी, बूसलोसिस और एब-क्ली-नीकल मेस्टोटिस तथा अन्य परजीविय स्थितियां निर्धारित की गई हैं। संगणक सहायक सूचना पद्धति पर आधारित रोग धारण करने वाली भविष्यवाणी (एस०डी०एफ०) का विकास किया गया है।

मात्स्यिकी

राष्ट्रीय समुद्री सजीव संसाधन आंकड़ा केन्द्र की स्थापना-जिसमें सभी समुद्री संसाधनों के जैविक एवं पर्यावरण संबंधी प्राचलों से संबंधित सूचना शामिल होगी।

अन्तःस्थलीय मत्स्य संसाधनों पर आंकड़े का आधार तैयार करना। इसके लिए अन्तःस्थलीय मात्स्यिकी संसाधनों के आकलन के लिए प्रणाली विज्ञान का मानकीकरण किया जाएगा। अन्तःस्थलीय मत्स्य संसाधन एवं उत्पादन के लिए प्रणाली विज्ञान की एक मानक पुस्तिका तैयार की जाएगी।

नियंत्रित स्थितियों के अन्तर्गत कैट मछलियों के उत्प्रेरित जीरों का संवर्धन, और प्रजनन और मछली के बच्चों का उत्पादन।

नियंत्रित स्थितियों के अन्तर्गत पूरे वर्ष मीठे जल में पाले जाने वाले बड़े झींगों के बच्चों का बड़े पैमाने पर उत्पादन, ब्रूड स्टाक का विकास एवं हैचरी की व्यवस्था करना।

ग्रहण की स्थिति में टाइगर झींगे में उत्प्रेरित परिपक्वन तथा ब्रूड स्टाक के विकास के लिए तैयार किये गये प्रौद्योगिकी पैकेट तथा घर के पिछवाड़े सफेद झींगा पालन की सरल व कम लागत वाली विधि।

व्यावसायिक स्तर पर आयात की जाने वाली झींगों की जातियों के हैचरी प्रौद्योगिकी तथा झींगों का बढ़ाने के लिए कल्चर का विकास। यह प्रौद्योगिकी कर्नाटक सरकार तथा केन्द्र शासित प्रदेश पांडिचेरी द्वारा शुरू की गई है।

खारे जल की फिनयुक्त मछली जातियों के ब्रूड स्टाक का विकास, प्रजनन, बीज उत्पादन तथा ग्रो-आउट कल्चर तैयार करना।

"फ्लो-थ्रू" सुविधाओं से युक्त गोल्डन महशीर के लिए एक मानक हैचरी यूनिट स्थापित की गई है ताकि इसके जीरे का विशाल पैमाने पर उत्पादन हो सके इसमें "एयरलिफ्ट" जल प्रणाली का प्रावधान है तथा वायु प्रवाह के लिए एक युक्ति भी लगायी गई है।

मोती पालन और मोती उत्पादन, खाने योग्य शुक्ति (आयस्टर) कल्चर, समुद्री खरपतवार कल्चर, सीपी तथा क्लैम कल्चर के लिए प्रौद्योगिकियों का पैकेज तैयार किया गया है।

मेजर कार्य, एनओटिक कार्य, महशीर, हिल्सा तथा व्यावसायिक दृष्टि से महत्वपूर्ण अन्य फिनयुक्त मछलियों तथा खोलयुक्त मछलियों की जातियों को लम्बे समय तक हिम-शीत परिरक्षण की मानकीकृत तकनीकें मछली जीन बैंक में रखी जा रही हैं।

Implementation of Yashpal Committee Report

3227. DR. SHRIKANT RAMCHANDRA JICHKAR: Will the Minister of HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT be pleased to state:

(a) at what stage is the implementation of Dr. Yashpal Committee Report;

(b) whether any monitoring Committee was formed with respect to this report, and if so, what is the finding of the maintoring Committee; and

(c) what is the manner in which the recommendations are proposed to be implemented?

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPTT. OF EDUCATION IN THE MINISTER OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT (SHRI MUHI RAM SAIKIA): (a) to (c) A Monitoring Committee for making periodical review of the progress of the implementation of the Yash Pal Committee recommondations had been act up in 1995. The Monitoring Committee developed 'monitoring proformae' which were circulated to all the States. The States were also requested to identify nodal agencies to take the follow up action with regard to the recommendations of the Yash Pal Committee. Nodal officers/agencies have already been identified by 21 States/UTs. The implementation of the recommendations of the Yash Pal Committee is a Continuing process to be carried out by the State Governments which have agreed to and have initiated action on most of the recommendations.

Purchase of Skimmed Milk Powder by DMS

3228. SHRI IQBAL SINGH: Will the Minister of ANIMAL HUSBANDRY AND DAIRYING be pleased to state:

(a) whether the DMS is purchasing skimmed milk powder from private agencies and dairies at high rate with the result that it is incurring losses;

(b) if so, whether any enquiry has been conducted in this regard;

(c) if so, the details thereof; and

(d) the action taken or proposed to be taken against the officials found responsible therefor?